ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 17 अंक-1 अप्रैल-I, 2016 पाक्षिक माउण्ट आबू ₹8.00

अनुभव का यही सार, सभी हैं अपने अनुसार

चिकित्सकीय मनों का हुआ कायाकल्प, लगभग 4000 डॉक्टरों ने लिया एक संकल्प, करेंगे दवाओं के साथ दुवाओं को शामिल

जीवन अवसर नहीं, विकल्प

यदि हमें स्वर्णिम भारत का निर्माण करना है तो पहले हमें मन की सफाई करनी होगी। क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या रूपी मैल ने हमारी आत्मा को घेर रखा है। हमें अपनी आत्मा से इन कचरों को हटाना होगा, तभी हम परमात्मा से जुड़ पायेंगे। उक्त बातें लोकमत समाचार और ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में विभागीय क्रीड़ा संकुल, मनकापुर के इनडोर स्टेडियम में आयोजित व्याख्यान में ब्र.कु. शिवानी ने कहीं।

नागपुर-महा.। जीवन एक सुंदर अनुभव है जिसका हर एक पल आनंद की ज़्यादा से ज़्यादा अनुभूति कराता है, जिसका हर क्षण मुझे मौका देता है कि मैं अपनी खुशी और प्यार अन्य आत्माओं को दूं। यह जीवन की यात्रा है। इस दौरान जीवन में कुछ दृश्य ऐसे आते हैं कि जो चिंता, डर और नाराजी से भरे होते हैं। कुछ पल ऐसे हैं जो उपेक्षा और तिरस्कार से भरे हैं। हम अपने जीवन को चेक करें कि मेरे जीवन में ऐसी कौन-कौन सी बातें हैं जिनसे हमारा मन थोड़ा निराश, थोड़ा परेशान, थोड़ा भयभीत हो जाता है। वे कौन से मौके हैं जिनके कारण जीवन मौज के बजाय श्रम लगने लगता है। किसी का ऐसा व्यवहार जो मेरे मन को परेशान कर देता है और मुझे यह जीवन सुंदर नहीं बल्कि संघर्ष लगने लगता है। उक्त विचार कोराडी रोड मानकापुर स्थित विभागीय क्रीड़ा संकुल के इनडोर स्टेडियम में `जीवन के सौंदर्य का आनंद' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. शिवानी ने व्यक्त किये।

ज़िन्दगी को काटना नहीं है, जीना है

उन्होंने कहा कि आजकल हम जब एक-दूसरे से मिलते हैं तो पूछते हैं कि जीवन कैसा है, जवाब मिलता है - कट रही है, चल रही है। जब हम ऐसी भावना व्यक्त करते हैं तो लगता है कि हम सज़ा काट रहे हैं लेकिन परमात्मा कहता है कि तुम फरिश्ते हो। चेहरा ऐसा रखो कि आप से कोई पूछे ही नहीं कि कैसा हाल है। क्योंकि चेहरे पर आपका भाव लिखा होता है, जब मन बदलता है तो चेहरे के भाव भी बदल जाते हैं, पर आजकल हमें चेहरा छुपाना पड़ रहा है।

मन को देखो, चेहरा ना देखो

हमारे मन में कुछ और होता है और चेहरे से कुछ और दिखाना चाहते हैं। परमात्मा कहता है कि हमेशा खुशहाल बने रहो। कभी खुश, कभी दुःखी, कभी परेशान, कभी भयभीत, कभी फिर खुश, इस तरह ऊपर-नीचे होते रहते हैं। शायद ही कोई ऐसा हो जिसके चेहरे पर एक ही भाव बना रहे। हम कुछ ऐसा करते हैं कि हमारी नकारात्मकता वाली लिस्ट खत्म हो जाए और सकारात्मकता आ जाए। शांतस्वरूप वाली आत्मा कहती है कि एक मिनट शांति चाहिए, प्यार वाली आत्मा कहती है दो मिनट प्यार दो। हमारी आत्मा प्यार और शांति मांगती है। इसी तरह हमारे सामने वाली आत्मा भी हमसे प्यार और शांति मांगती है। इस तरह सभी लोग एक-दूसरे से प्यार और शांति मांगते हैं। सभी जगह ऐसे लोग हैं जो केवल मांगते हैं। हमारी आत्मा इतनी डिस्चार्ज्ड है कि हम केवल मांगते ही रहते हैं। देने का सामर्थ्य किसी में नहीं है।

- **नागपुर लोकमत समाचार और ब्रह्माकुमारीज़ का संयुक्त अनोखा प्रयास**
- **मनकापुर इनडोर स्टेडियम, 15000 लोग इस प्रयास के साक्षी**
- **शरीरों को पढ़ने वालों को कहा, सबसे पहले बनें अपने मन के डॉक्टर**
- **कर्म और भाग्य, बाई चांस नहीं, बाई च्वाइस अर्थात् अवसर नहीं, विकल्प**
- **हर दिन, हर वार शुभ, क्यों बनाते हैं आप उसे अशुभ**

देने से जीवन में असीम सुख

परमात्मा कहते हैं कि सतयुग इस सृष्टि में था तब इस संसार में ऐसी आत्माएं थीं जो देने का भाव रखती थीं। तब सभी के चेहरे पर शांति के भाव थे। आज उन्हीं आत्माओं को देखने के लिए हम मंदिर जाते हैं, उन्हें हम देवता कहते हैं, इस कलियुग में उनके दर्शन कर शांति महसूस करते हैं। आज की आत्माएं डिस्चार्ज्ड हैं, सतयुग में यही आत्माएं फिर से चार्ज्ड हो जाएंगी। हमने ही मिलकर इस दुनिया को कलियुग बनाया है, हम ही सतयुग बनायेंगे।

चाहते आप कलियुग या सतयुग, ये आपका विकल्प है

उन्होंने आगे कहा कि आत्मा में फिलहाल मैल आ - शेष पेज 3 पर...